# सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

**योगेश कुमार पाल***
**प्रदीप कुमार***

**शोध सार**

वर्तमान की आवश्यकता बालक के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास करने से है जिसके लिये राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार महत्वपूर्ण हैं उनके दर्शन में मानव की सभी समस्याओं एवं दुःखों का समाधान निहित है। राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा जीवन दर्शन एवं शैक्षिक दर्शन के सम्बन्ध में दिये गये विचार वर्तमान समय में शैक्षिक जगत् एवं जीवन की विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक हैं वर्तमान समय मे केन्द्रित मानवीय क्रियाये मानव को मानव मूल्यो से दूर कर रही हैं शिक्षा का व्यावसायीकरण किया जा रहा है। जिसमें मनुष्य के केवल एक भौतिक पक्ष के विकास पर बल दिया जा रहा है। अतः आज शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों कों प्राप्त करने में असफल है क्योकि बालक के सर्वांगीण विकास के लिये उनके भौतिक पक्ष के साथ–साथ आध्यात्मिक पक्ष का भी विकास अति आवश्यक है इसके लिये दर्शनशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, नीतिशास्त्र के अध्ययन को भी आवश्यक माना जाये। राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति में सहायक माना है राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर दोनो विद्वानों ने शिक्षा को शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक तथा मानसिक विकास के लिए आवश्यक मानते हैं इसके द्वारा बालक में **विश्वबन्धुत्व** एवं **राष्ट्र प्रेम** की भावना का विकास होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में आत्मनिर्णय और आत्मानुशासन की क्षमता होनी चाहिए। यह गुण शिक्षा के द्वारा ही विकसित किये जा सकते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में स्वतन्त्र प्रयत्न एवं चिन्तन होना चाहिए, साथ ही इसमें क्रियाशीलता, रचना, सृजन, आनन्द, जिज्ञासा और रूचि का भी प्रयोग होना चाहिए। इन सभी तथ्यों को अपनाने से शिक्षण विधि प्रभावशाली हो सकती है इस प्रकार इन सब शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर शोध कार्य आधारित है।

***असिस्टेंट प्रोफेसर एम0एड्0 विभाग डी0वी0 कालेज, उरई (जालौन) उ0प्र0**
***एम0एड्0 छात्र डी0वी0 कालेज, उरई(जालौन) उ0प्र0**

**की वर्ड**– शारीरिक विकास, मानसिक विकास, नैतिक विकास, आध्यात्मिक विकास, विश्वबन्धुत्व, राष्ट्र प्रेम, सृजन, जिज्ञासा, रूचि।

शिक्षा बालक के लिए होती है न कि बालक शिक्षा के लिए। कहने का तात्पर्य है कि बालक को केन्द्र मानकर ही शिक्षा की समग्र व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। बालक की वैयक्तिक विशेषताओं, उसकी अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचानते हुए उनका सर्वोत्तम विकास करना ही शिक्षा की महती ध्येय है आत्म–परिपूर्णता के शिखर की ओर अग्रसर व्यक्ति ही समाज को भी नई ऊँचाईयाँ प्रदान करने मे सक्षम होते है। नूतन विश्व के सृजन में ऐसे सर्वतोमुखी व्यक्तित्व ही अपना योगदान दे सकते है जिन्होने आत्मानुभूति के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया हो। बालक मनुष्य का प्रतिरूप होने के कारण उसके विचार तथा व्यवहार में समग्रता लाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है जो कि दर्शन से प्रभावित होती है। दर्शन के अन्तर्गत विभिन्न मनीषियों की विचारधारायें तथा अनुभव होते है, जिनके आधार पर मानव सभ्यता का विकास कर सकता है शिक्षा समाज का कार्यकारी अंग है शिक्षा समय–समय पर सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्थित की जाती है। सामाजिक संरचना में परिवर्तन हुआ करते है और समय–समय पर ज्ञान की वृद्धि होती है तथा जिस मनुष्य पर से अज्ञानता का आवरण हटता है वह अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक ज्ञानी होता जाता है। जो व्यक्ति में यह आवरण पूर्णयता हट जाता है वह सर्वज्ञ सर्वदर्शी हो जाता है जिस प्रकार चकमक पत्थर के घर्षण द्वारा अग्नि प्रज्वलित होती है अर्थात् पत्थर में निहित है उसी प्रकार ज्ञान बालक के मन मे जन्म से ही निहित है जो सुझाव द्वारा प्रकाशित होता है। यह सुझाव तथा निर्देशन उद्दीपक का कार्य करते है शिक्षा का अर्थ क्या यह नहीं है कि विभिन्न समस्याओं का सामना करने के लिए वह आपको समर्थ बनाए। यह आवश्यक है कि इन सभी समस्याओं का ठीक ढ़ंग से सामना करने के लिए आपको शिक्षित किया जाये। यही शिक्षा है न कि मात्र कुछ परीक्षाएँ पास कर लेना, कुछ विषयों का, जिनमें आपकी रूचि बिल्कुल नही है, उनका अध्ययन कर लेना। सम्यक् शिक्षा वही है जो विद्यार्थी को इस जीवन का सामना करने में मद्द करे, ताकि वह जीवन को समझ सके, उससे हार मान न ले, उसके बोझ मे दब न जायें, जैसा कि हममें से अधिकांश लोगो के साथ होता है लोग विचार, देश, जलवायु, भोजन, लोकमत यह सभी कुछ लगातार आपको उस खास दिशा मे ढकेल रहे है जिसमे समाज आपको देखना चाहता है आपकी शिक्षा ऐसी हो कि वह आपको इस दबाब को समझने के योग्य बनाए, इसे उचित ठहराने के बजाय आप इसे समझे और इससे बाहर निकले, जिससे कि एक व्यक्ति होने के नाते, एक मनुष्य होने के नाते आप आगे बढकर कुछ नया करने में सक्षम हो सके और परम्परागत ढ़ंग से विचार करते न रह जायें।

इसलिए आज इस बात की अत्यन्त आवश्यकता व प्रांसगिकता बन पड़ी कि आध्यात्मिक पहलुओं से जुड़े शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक दर्शन को क्रमबद्ध रूप प्रदान किया जाये तथा उनका तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाये। आधुनिक सदी के महान विचारक एवं शिक्षा मनीषियों में सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर का एक स्वतन्त्र चिन्तक एवं विचारक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान नियत है। राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय है व्यक्ति के व्यक्तित्व के **सर्वांगीण विकास** करने की प्रक्रिया या शक्ति। सच्चे अर्थ में मनुष्य वही है जिसका बौद्धिक, आत्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक व चरित्रिक एवं शारीरिक विकास आदि सभी प्रकार का विकास हुआ हो। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शिक्षा के प्रति यह भी विचार है कि ''हमारी शिक्षा उस समय तक अपूर्ण है जब तक उसके द्वारा हमारी चारित्रिक और आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति नहीं होती।'' अतः वह शिक्षा द्वारा ही अपनी नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने पर बल देते है। **रविन्द्रनाथ टैगोर** के अनुसार ''वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है।'' रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी विचार के उनके निजी अनुभवों पर आधारित है वह बालक को ऐसी शिक्षा देना चाहते थे जिससे उनका सर्वागींण विकास हो। वे बच्चों के ऊपर थोपी गई शिक्षा के विरूद्ध थे। वह चाहते थे एक ऐसी शिक्षा हो जिससे बालक किसी प्रकार का बन्धन महसूस न करे और जैसा चाहे वैसा सीख सके। बन्धनमुक्त शिक्षा से उनका अभिप्राय यह नहीं था कि बालकों को अपने भविष्य के बारे में सोचने के लिए छोड दिया जाये। किन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं था कि बालक पर किसी ऐसी बात को सीखने के लिए जोर दिया जाये जिसे वह नहीं चाहता। जिस प्रकार एक पौधा प्रकृति के अनुसार विकास करता है परन्तु उसकी वृद्धि होते ही सभी आवश्यक तत्व प्रदान किये जायें इसी प्रकार बालक को शिक्षा देना पौधे के बढ़ने के समान है, जिससे उसका आध्यात्मिक, सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के आधार पर प्रदान की जाने वाली शिक्षा के द्वारा ही सर्वांगीण विकास सम्भव है। यही बालक कालान्तर में सम्पूर्ण मानव के रूप मे विकसित होता है जो कि समाज का आवश्यक अंग बनता है तथा समाज को उचित मूल्यों के आधार पर विकसित करने में सहायक होता है।

वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में रोजगारोन्मुखी शिक्षा की व्यवस्था अवश्य प्रदान की गयी है यही कारण है कि हमारा देश विश्व के देशों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जिससे विश्व के देश आशावादी दृष्टि से भारत की ओर टकटकी लगाये हुये हैं किन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है क्योंकि आज की शैक्षिक व्यवस्था में पल–बढ़ रहे हैं उनमें नैतिक मूल्यों, बड़ों के प्रति सम्मान की भावना देश और



समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना कर्तव्यनिष्ठ इत्यादि का अभाव सर्वत्र देखा जा रहा है। वस्तुतः शिक्षा जब व्यक्ति को एक आदर्श मनुष्य नहीं बना सकती अर्थात् मनुष्य भौतिकतावादी चकाचौंध में आकर्षित होकर अपना कर्तव्य और सांसारिक तथा पारलौकिक कल्याण भूल जाता है तो उसका पतन अवश्यम्भावी है। ऐसी परिस्थिति में हमारे गौरवशाली देश भारत वर्ष के महामनीषी चिन्तकों एवं दार्शनिकों के उद्धान्त शैक्षिक विचारों को भली भाँति जानकर और उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान में आवश्यकता को समझकर उनका तुलनात्मक अध्ययन करने तथा उनकी प्रसांगिकता निर्धारित करने की आवश्कता को समझकर शोधार्थी ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने का निश्चय किया है।

**उद्देश्य**

1. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।
2. रविन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।
3. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
4. रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
5. राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

**शोध विधियाँ**–

i. ऐतिहासिक शोध विधि ii. दार्शनिक विधि। iii.वर्णनात्मक विधि। iv. तुलनात्मक विधि।

**समस्या का सीमांकन**– सीमांकन से तात्पर्य समस्या के क्षेत्र को सीमित करने से है प्रस्तुत लघु शोध में राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों तक सीमित रखा गया है शोध मे उनके दार्शनिक चिन्तन व शैक्षिक विचारों का वर्णन किया गया है।

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**–

**1. सिंह, बाला (2010)** ने भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में डॉ0 राधाकृष्णन के शिक्षा–दर्शन का वर्तमान समय में उपादेयता का समालोचनात्मक अध्ययन किया **निष्कर्ष** में पया कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रमुखतम् शिक्षा दार्शनिक थे जिन्होने आचार्य के रूप में और शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न पदों पर लम्बे कार्य अवधि तक शिक्षा की समस्याओं को निकटता से जाना और परखा था विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य देशों के विश्वविद्यालयों में अनेक विषयों के आचार्य के रूप

में तथा अनेक विश्वविद्यालयों के उपकुलपति पद से सुशोभित सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा की अवधारणा, लक्ष्य तथा शिक्षा के विभिन्न अंगों पर गहन अध्ययन किया। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने विश्व के सभी महान दर्शनों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया था। भारत के उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति एवं देशों के राजदूत के रूप में, विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में लम्बे समय तक रहने तथा भ्रमण करने के कारण उनके विचारों में विश्व–बन्धुत्व तथा विभिन्न संस्कृतियों के प्रति समादर की भावना दिखाई पड़ती है।

**2. पीताम्बरा साहू (2013)** ने राधाकृष्णन के जीवन व शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन किया **निष्कर्ष** में पाया कि राधाकृष्णन महान व्यक्तित्व के व्यक्ति थे वह अपने समय के महान नेता, अच्छे शिक्षक थे वह जनतन्त्र के रूप में फलता–फूलता देखना चाहते थे वे चाहते थे कि शिक्षा का लक्ष्य भौतिक सफलता पाना नहीं है अपितु मानव को सच्चा मानव बनाना है।

**3. डॉ0 बलवीर सिंह जम्बाल (2014)** ने प्रस्तुत शोध में टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अवलोकन किया जिसका निम्न **निष्कर्ष** प्राप्त हुआ कि रविन्द्रनाथ टैगोर एक महान दार्शनिक व शिक्षाशास्त्री थे। वे प्रकृति से बहुत ही प्रेम करते थे उन्होने कहा है कि **''सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सृष्टि से हमारे जीवन का सामांजस्य स्थापित करती है।''** सर्वोत्तम शिक्षा वह है जो हमे सूचना तथा ज्ञान ही प्रदान नहीं करती है अपितु हमारे जीवन का विश्व के समस्त जीवो के साथ मेंल उत्पन्न करती है टैगोर जी प्रकृति को प्रथम तथा समाज को उसके बाद मानते थे उनका रूसो की तरह मानना था कि बालक के ऊपर किसी प्रकार का दबाब नही होना चाहिए। बच्चा प्राकृतिक वातावरण में नगर व शहर से दूर शिक्षा ग्रहण करता है तो बालक अच्छा सीख सकता है। उन्होने स्वाध्याय पर भी बल दिया है वे बालक की शिक्षा के लिए प्रकृति को ही सर्वश्रेष्ठ मानते है जिसमें बालको को खुशी और प्रसन्नता के साथ ज्ञान भी मिलता है प्रकृति और शिक्षा के समन्वय के सन्दर्भ में लिखा है कि प्रकृति के पश्चात् बालक को सामाजिक व्यवहार की धारा के सम्पर्क में लाना चाहिए। बालक प्राकृतिक वातावरण में जितना सीख सकता है वह किसी प्रकार के कठोर अनुशासन में नही सीख सकता है।

**4. डॉ0 बलवीर सिंह जम्बाल (2015)** ने प्रस्तुत शोध में राधाकृष्णन के व्यक्तित्व व शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया और **निष्कर्ष** पाया राधाकृष्णन राष्ट्र के महान नायक (सूरमा) थे उन्होंने राष्ट्र के विकास के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दिया वे देश के सर्वोच्च पदों पर भी आसीन रहे। उन्होने मानव भलाई व सामाजिक पर्यावरण स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। शिक्षा के सम्बन्ध में स्पष्ट



किया कि शिक्षा की समुचित पद्धति के द्वारा मानव के सन्तुलित विकास पर बल देना चाहिए शिक्षा को मानव निर्माण का महान कार्य करना चाहिए राधाकृष्णन स्वयं अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। वे विश्व समाज, विश्व संस्कृति व विश्व अन्तःकरण को स्थापित करना चाहते थे।

**5. सिंह एवं सिंह (2016)** ने रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन किया। **अध्ययन** में पाया कि रविन्द्रनाथ टैगोर बालकों का सर्वांगीण विकास चाहते थे, एक पक्षीय नहीं। इस सम्बन्ध में उन्हे प्राचीन गुरूकुल प्रणाली का आदर्श सर्वथा मान्य था। उनके लिए बालको के बौद्धिक और मानसिक पक्ष के समान ही शारीरिक, आत्मिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक आदि पक्ष भी अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। बालकों की वास्तविक उन्नति प्रकृति माता की गोद में ही सम्भव है प्रकृति से एकरूपता स्थापित कर वे मानव और जीव मात्र से तादात्म्य स्थापित कर सकेगें। शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में टैगोर ने विदेशी भाषा के माध्यम को अस्वीकार किया है विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा विश्व के किसी भी सभ्य देश में नही प्रदान की जाती है इससे छात्रों का मन विकारग्रस्त हो जाता है और वे अपने ही देश में परदेशी के समान मालूम पड़ते है।

**सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचार :–**

**तत्वमीमांसा :**–राधाकृष्णन शंकर के वेदान्त से प्रभावित होने पर भी अन्ध समर्थक नहीं थे। वे विश्व प्रक्रिया को विकासशील मानते हैं उनके अनुसार हम जीवन का आदि और अन्त नही जानते, केवल उसका मध्य जानते है, जो कि निरन्तर परिवर्तनशील है। जगत् परम सत् की अनन्त संभावनाओं की क्रमिक अभिव्यक्ति है ब्रह्य का विवर्तमात्र नहीं है जगत् परम सत् पर आधारित होने के कारण सत्य है आत्मा या ब्रह्म को सत्य मानना समस्त जगत् की सत्यता प्रकारान्तर से स्वीकृत है, क्योकि जगत् उसी पर आश्रित है। आत्मा ही सबका विज्ञाता है। राधाकृष्णन के अनुसार ईश्वर एवं जीव दोनो उपाधिग्रस्त हैं दोनो ही सीमित एवं सापेक्ष होते है ऐसी स्थिति में यदि ईश्वर ब्रह्म है और जीव तथा ब्रह्म में सात्विक दृष्टि से अभेद है तो ईश्वर और जीव में उसके अनुसार भेद उतना अधिक नही रह जाता है परन्तु जहाँ ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वत्र विद्यमान है। वहाँ जीव प्रत्यय, नितान्त लघु एवं दुर्बल है।

टैगोर संसार को ईश्वर के व्यक्त्वि की अभिव्यक्ति मानते थे इसलिये इनके अनुसार ईश्वर द्वारा निर्मित यह जगत् उतना ही सत्य है जितना ईश्वर अपने आप में सत्य है। टैगोर मानते थे कि बीज के रूप में वह निराकार है। आत्मा को टैगोर ने उपनिषदों के अनुसार तीन रूप में स्वीकार किया जिसमें इन्होंने प्रथम रूप में यह मानव को आत्मरक्षा में प्रवृत्त करती है दूसरे रूप में ज्ञान विज्ञान की खोज

और अनन्त ज्ञान की प्राप्ति की ओर प्रवृत्त करती है तीसरे रूप में अपने अनन्त की ओर समझने की ओर प्रवृत्त करती है ये तीन कार्य आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं इनमें आत्मानुभूति को मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य मानते थे।

**ज्ञानमीमांसा** :– धार्मिक अनुभूति के अन्तर्गत ही राधाकृष्णन ने परम सत्ता एवं ईश्वर की समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ज्ञानत्मक अनुभव के तीन साधन है– इन्द्रियानुभव तर्क, बुद्धि और प्रज्ञा (प्रातिभ ज्ञान)। इन्द्रियानुभव का विषय ज्ञान का क्षेत्र है इस क्षेत्र को ही हम ब्राह्म जगत् की संज्ञा देते हैं इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान विज्ञान का आधार है। बौद्धिक ज्ञान, विश्लेषण एवं संश्लेषण से प्राप्त किया जाता है। विश्लेषणात्मक होने के कारण बुद्धि जीवन को उसकी समग्रता में नही ग्रहण करती है। परम सत्ता बुद्धि की पहुँच के परे है ऐसा इसलिए कि बुद्धि विषय और विषय के भेद को मानकर चलती है जबकि परम सत्ता भेद रहित है उसका ज्ञान न तो इन्द्रियो से और न ही बुद्धि से सम्भव है उसका ज्ञान प्रज्ञा द्वारा अपरेक्षानुभव में होता है। प्रज्ञा ज्ञान ही धार्मिक बोध है, जिसमें कलात्मक बोध एवं तार्किक ज्ञान का समन्वय हो जाता है।

ज्ञान प्राप्ति के साधनों के सम्बन्ध में टैगोर मानते थे कि आध्यात्मिक तत्वों (आत्मा–परमात्मा) का ज्ञान सूक्ष्म माध्यमों (योग) द्वारा एवं भौतिक वस्तुओं एवं क्रियाओं का ज्ञान भौतिक माध्यमों (इन्द्रियों) द्वारा प्राप्त होता है सूक्ष्म माध्यमों मे उन्होंने प्रेम योग के महत्व को माना उन्होने स्पष्ट किया कि आध्यात्मिक तत्व के ज्ञान के लिए सबसे सरल मार्ग प्रेम मार्ग है प्रेम ही हमें मानव मात्र के प्रति संवेदनशील बनाता है यही हमें एकात्मक भाव की अनूभूति तथा ईश्वर की प्राप्ति कराता है।

**मूल्य मीमांसा** :– राधाकृष्णन का मानना है कि मोक्ष अनन्त अवस्था की प्राप्ति है जिसे संकीर्ण व्यक्तिवादिता के सन्दर्भ में नहीं समझा जा सकता इसके लिए श्रवण, मनन, निदिध्यासन के ज्ञान को स्थान दिया है।

टैगोर मनुष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति का योग मानते थे इसलिए वे दोनों प्रकार के विकास पर समान बल देते थे इसके लिए ये मनुष्य को पहले अच्छा मनुष्य बनाने पर बल देते हैं मानव सेवा को गुरूदेव ईश्वर सेवा मानते थे।

**सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार**

सर्वपल्ली राधाकृष्णन का यह मानना था कि शिक्षा की समुचित पद्धति को मनुष्य के सन्तुलित विकास पर जोर देना चाहिये। शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि **''शिक्षा को मानव और समाज का निर्माण करना चाहिए अनन्तः शिक्षा मानव निर्मात्री एवं समाज निर्मात्री होनी चाहिए।''** राधाकृष्णन शिक्षा को मानव के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया के रूप में मानते थे। राधाकृष्णन के



अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की विशिष्टता का विकास करना और एक वर्ग रहित समाज का निर्माण करना है राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं अन्तर्निहित योग्यताओं का विकास करना, संकल्प शक्ति का विकास करना, चरित्र निर्माण, नेतृत्व क्षमता का विकास करना, लोकतन्त्र का संरक्षण करना, विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास करना आदि। राधाकृष्णन मानव के किसी एक पक्षीय विकास को महत्व न देते हुए वह मानव के सर्वांगीण विकास पर बल देते थे। उन्होने पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों एवं विभिन्न क्रियाओं पर बल दिया जैसे बुनियादी पाठ्यक्रम, शारीरिक शिक्षा, भाषा, वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विषय, सामाजिक विज्ञान, नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा, वाणिज्य शिक्षा, कानून शिक्षा, चिकित्सा की शिक्षा पर बल दिया। राधाकृष्णन शिक्षण विधियों के सम्बन्ध में कहते थे कि ज्ञान प्राप्ति के लिए निम्न विधियों पर बल दिया जाये जैसे प्रत्यक्ष विधि, अनुमान विधि, शब्द विधि। राधाकृष्णन ने शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया उन्होने कहा कि जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है वह **गुरू** कहलाता है एवं जिसकी आत्मा में यह शक्ति संचालित होती है उसे **शिष्य** कहते हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वे सांस्कृतिक विरासत को छात्रों को सौपें। राधाकृष्णन के अनुसार अनुशासन द्वारा किसी प्राणी के संचय चरित्र का परिज्ञान होता है जिसे वह समाज द्वारा मान्य विचारों एवं क्रियाओं के फलस्वरूप स्वःनियंत्रण एवं स्वभाव से प्राप्त करता है। अनुशासन का तात्पर्य सच्चरित्रता से है। इसके द्वारा सौम्य स्वभाव तथा सद्भाव का उन्मेष होता है वर्तमानकाल में अधिकांश देशों में शिक्षकों द्वारा छात्रों का दण्ड दिया जाना एक कानूनी अपराध घोषित कर दिया गया है। विद्यालय के सम्बन्ध में इनका विचार था कि कोई भी विद्यालय स्वयं को एक सच्चा विद्यालय नहीं मान सकता है जब तक कि वह न केवल विद्वान बल्कि सहृदय विद्यार्थियो का निर्माण न करे। उनका मानना था कि विद्यालयों की आत्मा को जीवित और राष्ट्र को चिंतनमय बनाना चाहिये। बालक का शारीरिक,मानसिक, नैतिक व चारित्रिक विकास विद्यालय द्वारा ही सम्भव है।

टैगोर उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री के रूप में विख्यात हैं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है उनके द्वारा स्थापित की गई विश्वभारती संस्था, टैगोर ने शिक्षा को स्पष्ट करते हुए कहा कि ''सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित कर सके।'' इनको विश्वास था कि ईश्वर का प्रकटीकरण मनुष्य की अपेक्षा प्रकृति के द्वारा अधिक स्पष्ट है जिससे उसमें संसार की सभी वस्तुओं में प्रेम और सहयोग की भावना विकसित हो। टैगोर ने शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा शिक्षा का अर्थ **''मस्तिष्क को इस योग्य बनाना कि वह अन्तिम सत्य को जान सके।''** शिक्षा के उद्देश्यों को टैगोर ने स्पष्ट किया कि शारीरिक

विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास, अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास, व्यावसायिक आदि का विकास करना है। टैगोर ने पाठ्यचर्या में निम्नलिखित विषय एवं क्रियाओं का समावेशन क्रिया जैसे मातृभाषा अंग्रेजी, इतिहास, कृषि, क्षेत्रीय अध्ययन, भ्रमण, विभिन्न वस्तुओं का संग्रह और अनुक्रियाओं जैसे–खेल–कूद नाटक, संगीत, नृत्य, ग्रामो उत्पादन, और समाज सेवा कार्य इस आधार पर पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान रहा टैगोर ने शिक्षण के प्राचीन और तत्कालीन विधियों का जिस रूप में प्रयोग किये जाने पर बल दिया और जिस रूप में इन्होंने स्वयं उनका उपयोग किया उस पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है। इन्होंने निम्नलिखित शिक्षण विधियों को स्पष्ट किया जैसे– मौखिक विधि, स्वाध्याय विधि, विश्लेषण एवं संश्लेषण विधि, क्रिया विधि, प्रयोग विधि, टैगोर ने शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया शिक्षक के विषय में इनके विचार पूर्णरूप से परम्परावादी थे इनकी दृष्टि से शिक्षक को ज्ञानी, संयमी और बच्चों के प्रति समर्पित होना चाहिए इनके अनुसार वास्तविक शिक्षक वही है जो बालकों को शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ स्वयं भी निरन्तर ज्ञान की खोज में लगा रहे। वही शिक्षक ज्ञान दे सकता है जो स्वयं ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में लगा हो टैगोर बालक को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते है वे शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का आदर करते है; उनके लिए अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था पर बल देते है परन्तु दूसरी ओर उनके ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की अपेक्षा करते हैं। टैगोर के अनुसार आत्मा से शासित होना ही सच्चा अनुशासन है अर्थात् टैगोर आत्म–अनुशासन पर बल देते हैं। वे अनुशासन के अनुयायी थे पर कठोर और दमनात्मक अनुशासन के पक्ष में नही थे। टैगोर ने स्पष्ट किया कि विद्यालय को नगर के कोलाहल से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थित होना चाहिए इनका विश्वास था कि शान्त पर्यावरण में शिक्षक और उसकी आनन्दमय अनुभूति है इन्होने कहा कि धर्म की शिक्षा व्याख्यान अथवा पुस्तकों के माध्यम से नही दी जा सकती इसकी शिक्षा को जीवन का अंग बनाकर ही दी जा सकती है इसके लिए विद्यालय का प्रारम्भ प्रातः कालीन प्रार्थना, सभी धर्मों के पैगम्बरों के जन्मदिन मनाने व उनके उपदेशों से बच्चों को परिचित कराने, प्रकृति, कला और संगीत के सौन्दर्य में ईश्वरीय तत्व की अनुभूति करने दीनहीनों की सेवा करने, गिरे हुए को ऊँचा उठाने और समाज, राष्ट्र एवं विश्वहित के कार्यों को करने पर बल दिया जाए।

**सर्वपल्ली राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारो का तुलनात्मक अध्ययन :–**

शिक्षा का अर्थ राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों में शिक्षा का अर्थ अपना विशिष्ट रखता है। राधाकृष्णन दार्शनिक आधार पर मानव



के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं जब कि रविन्द्रनाथ टैगोर ने जहाँ शिक्षा की सर्वव्यापकता पर प्रकाश डाला है।

किन्तु दोनो विद्वानों के शैक्षिक विचारों में शिक्षा के अर्थ में कुछ आधार पर समानता है राधाकृष्णन जी के अनुसार 'शिक्षा वह है जो मानव का बौद्धिक, आत्मिक, आध्यात्मिक विकास करे। किन्तु टैगोर ने शिक्षा को अध्यात्मिकता की आधारशिला माना है उनके अनुसार शिक्षा मनुष्य को आत्मानुभूति तथा आत्मबोध कराती है मनुष्य को मनुष्य योग्य बनाती है।

**शिक्षा का उद्देश्य** :– राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य वर्ग रहित मानवतावादी समाज का निर्माण करना है टैगोर ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया ''वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन रक्षा करने में सहायता करती है।'' राधाकृष्णन् सृजनात्मकता, चरित्र निर्माण, नेतृत्व क्षमता के विकास को शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं टैगोर जी शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, व्यक्तिगत विकास, सांस्कृतिक विकास एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास, व्यावसायिक विकास, आध्यात्मिक विकास, आदि को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। दोनो ही समान रूप से विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। दोनो के विचारों में समानता मिलती है।

**पाठ्यक्रम** :– राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों में पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अनेक समानताएँ हैं दोनो ही प्राकृतिक विज्ञानो, मानविकी विषयों के साथ ही कला, धर्मशास्त्र और शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करतें है। किन्तु एक ओर जहाँ राधाकृष्णन जी पाठ्यक्रम में मानविकी विषयो को अधिक महत्व देते हैं वहीं दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ टैगोर पाठ्यक्रम मे पाठय–पुस्तकों को ज्यादा महत्व नहीं देते हैं। अतः दोनो विद्वान क्रियात्मक पाठ्यक्रम पर बल देते है।

**शिक्षण विधि** :–राधाकृष्णन व्याख्यान, सस्वर पाठ, खेल–कूद विधि जैसी शिक्षण विधियों का समर्थन करते हैं इनके अनुसार बालक की प्रकृति के अनुसार ही शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। टैगोर ने शिक्षा पद्धति के प्रयोग में अध्यापक, उसकी योग्यता और अनुभव को पर्याप्त महत्व प्रदान किया है। टैगोर ऐसी शिक्षण– पद्धति का समर्थन करते थे जो बालकों की जिज्ञासा को जाग्रत करे तथा अभिरूचि उत्पन्न करे। अतः दोनो ही शिक्षाविदों के शिक्षण विधि में लगभग समानता मिलती है।

**शिक्षक** :– राधाकृष्णन एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया है शिक्षक ज्ञान का भण्डार होता है वही बालक को सही मार्ग पर ले जाता है तथा उसमें निहित योग्यता का विकास करता है। इन दोनो

शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षक आदर्शवादी हो वह अपने बच्चो में उच्च चरित्र का निर्माण कर सके।

**शिक्षार्थी** :– शिक्षार्थी शिक्षा के लिये नहीं है बल्कि शिक्षा शिक्षार्थी के लिये है यह दोनो शिक्षा दार्शनिक बालको में स्वाभाविक रूप से सीखने पर बल देते हैं अध्यापक के लिये छात्र की यह संकल्पना अत्यन्त महत्व रखती है छात्र की शक्तियाँ भिन्न–भिन्न हो सकती हैं परन्तु उसमे निहित आत्मा एक। दोनों विचारकों का मानना था कि शिक्षक समान छात्रों को भी ज्ञान का पिपासु होना चाहिए। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों सादा जीवन और उच्च विचार के हों।

**अनुशासन** :– अध्ययन के सुचारू रूप से चलाने के लिए अनुशासन आवश्यक है इन्होंने छात्रों के लिए आत्मानुशासन पर बल दिया है इनका मानना है कि आत्मा से शासित होना ही सच्चा अनुशासन है जिसके द्वारा मनुष्य में नैतिक व चारित्रिक विकास होता है।

**विद्यालय** :– राधाकृष्णन का मानना था कि बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक व चारित्रिक विकास विद्यालय द्वारा ही सम्भव है। जबकि टैगोर का मानना है कि बालक को प्राकृतिक वातावरण में रखना चाहिए और वह केवल विद्यालय की सीमाओं में ही सम्भव है। उन्होंने विद्यालय के सम्बन्ध में विचार दिया है ''यदि हमें आदर्श विद्यालय की स्थापना करनी है तो मानव के निवास स्थान से दूर एकान्त में खुले आकाश के नीचे वृक्षों तथा पौधों के मध्य विद्यालय स्थापित करना चाहिये।''

**धार्मिक शिक्षा** :–राधाकृष्णन धार्मिक शिक्षा को शिक्षा का अनिवार्य अंग मानते हैं उनके अनुसार धर्म कोई विशेष मत नहीं है बल्कि 'सत्य का बोध' है। इसलिए वे विद्यालय में धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य मानतें हैं। टैगोर धार्मिक प्रवृत्ति वाले पुरूष थे और इसलिए उन्होंने धर्म को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है किन्तु धर्म को उन्होंने किसी सम्प्रदाय के कठोर सिद्धान्त से विद्यार्थियों को दीक्षित करना नही माना है, बल्कि धर्म शब्द का अत्यन्त उदार और मानवीय अर्थ लगाया है टैगोर किसी एक धर्म की वैयक्तिक शिक्षा देने के पक्ष में नही थे बल्कि वह सामान्य एवं अविधिक ढंग से धार्मिक शिक्षा देने के पक्षधर थे जिसमें 'विश्वधर्म' की भावना का प्रचार हो सके।

**शोध निष्कर्ष** :– राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर दोनो का शिक्षा दर्शन जीवन की समग्रता को केन्द्र में रखकर अग्रसर होता है इनका विचार दर्शन के अभिनव रूपान्तर के लिये सम्पूर्ण योजना लेकर चला है इनका मनोवैज्ञानिक फलक मानव व्यक्तित्व के समस्त स्तरों के भीतर झांककर उनके समग्र विकास का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करता है। शिक्षा समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने का अचूक साधन है। आज मानव मूल्यों का पतन हो रहा है और शिक्षा के द्वारा ही इनकी



उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है किसी भी देश की प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है आज की प्रचलित शिक्षा पद्धति अपने इस कार्य को करने में असफल सिद्ध हो रही है। अतः शिक्षा के उचित स्वरूप को जानने के लिये भारतीय शिक्षाविद्वों यथा रविन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द, गांधी जी, विवेकानन्द एवं राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन को चयनित किया जायें राधाकृष्णन एवं रविन्द्रनाथ टैगोर ने दार्शनिक चिन्तन के द्वारा शिक्षा को मजबूत आधार प्रदान किया है। इनका ये मानना था कि शिक्षा और दर्शन में घनिष्ट सम्बन्ध है इन दोनो महापुरूषों के शैक्षिक विचार वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने में काफी सहायक हैं यदि इन दोनो दार्शनिक के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षक प्रक्रिया की व्यवस्था की जाये तो मानव का सर्वांगीण विकास होने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर ने स्वयं तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था को अच्छी तरह से समझा और अपने दार्शनिक विचारों को व्यक्त किया। राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को एक ऐसे ज्ञान और कौशल के रूप में स्वीकार किया जो मनुष्य का सर्वांगीण विकास कर सके। जिसके द्वारा मनुष्य का शारीरिक विकास, मानसिक विकास, नैतिक व चारित्रिक विकास हो सके।

शिक्षा में पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में पाठ्यक्रम का उद्देश्य बालकों को धन कमाने के लिए तैयार करना है। सभी विद्यार्थी किसी तरह से परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए अन्धवत् अध्ययन करते हैं गम्भीर अध्ययन के अभाव में उनका पूर्ण और उत्तम विकास नहीं हो पाता है जबकि राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर ने बाल केन्द्रत पाठ्यक्रम का समर्थन किया है जिसके द्वारा बालक अपनी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार विकास कर सके। राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ की मान्यता भी कि शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ऐसे पाठ्यक्रम को शिक्षा का अंग बनाया जाना चाहिये। जिससे बालक अपनी रूचि व योग्यता के अनुसार विषयों का चयन कर सके पाठ्यक्रम में भिन्न विषय सम्मिलित हों। सामाजिक विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, बुनियादी पाठयक्रम, कृषि शिक्षा, वाणिज्य शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, कानून शिक्षा आदि का पाठ्यक्रम में विस्तृत समावेश किया जाये जिससे बालक अपनी रूचि व योग्यतानुसार विषयों का चयन करके अपना भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों पक्षों का विकास कर सके।

राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षण विधियों सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करने पर पाया गया कि राधाकृष्णन और टैगोर परम्परागत् विधियों का विरोध करते थे तथा प्रायोगिक एवं मनोवैज्ञानिक विधियों के प्रयोग पर बल दिया उनका मानना था कि मौलिक विधियों के प्रयोग से बालक में नई खोजों के

प्रति रूचि जागृत होगी। इन दोनों महापुरूषों की मान्यता थी कि बालकों को किसी विशिष्ट तकनीक से पढ़ाने पर बालक अच्छी तरह सीखते हैं। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया बालक के समग्र विकास के प्रति समर्पित है।

राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षक संकल्पना के अनुसार शिक्षक में निम्न गुणों का होना आवश्यक माना। इन दोनों महापुरूषों के शिक्षक के लिए आदर्शवादी भावना को महत्व दिया इसके अलावा वह शारीरिक रूप से स्वस्थ्य हों, उसमें नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक गुण आदि विद्यमान होने चाहिए तथा उसमें आत्मविश्वास, धैर्य, सहनशीलता तथा मनोवैज्ञानिक गुण होने चाहिए जो बालक को अच्छी तरह से समझ सके तथा शिक्षक अपने ज्ञान थोपने के बजाय उसे ज्ञान के प्रति जिज्ञासु बना सकें। वे शिक्षक को मार्ग दर्शन दिखाने वाले के रूप में मानते हैं।

राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर शिक्षार्थी से कुछ अपेक्षायें रखते है जिससे शिक्षण कार्य आसानी से सम्पन्न किया जा सके। वे छात्रों में निम्न गुणों का होना आवश्यक मानते हैं जागरूकता, संगम, परिश्रमी, आदर–भाव, जिज्ञासु, शिष्टाचार आदि। इसके लिए विद्यालय या कालेज का वातावरण ऐसा होना चाहिए जो बालक की जिज्ञासाओं की पूर्ति कर सके तथा बालकों का सम्पूर्ण विकास हो सके।

राधाकृष्णन और रविन्द्रनाथ टैगोर दमनात्मक अनुशासन का विरोध करते हैं तथा बालक के लिए आत्मानुशासन पर बल देते हैं क्योकि बाहर से थोपा गया अनुशासन बालक के मानसिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है जो कि रविन्द्रनाथ टैगोर ने स्वयं महसूस किया है इसके लिए उन्होंने स्वयं विद्यालय भी छोड़ दिया।

अतः दोनो दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों का आलोचन कर ऐसा निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा सम्बन्धी समस्त समस्याओं का समाधान इनके शैक्षिक विचारों द्वारा किया जा सकता है और बालक का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. गौर, अखिला सिंह (2008) : शिक्षा दर्शन. लखनऊ एवं इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन. पृष्ठ 254–265
2. गौर, अखिला सिंह (2008) : शिक्षा दर्शन. लखनऊ एवं इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन. पृष्ठ 317–323
3. गुप्ता, अलका (2011) : शैक्षिक संतुष्टि प्रथम संस्करण इलाहाबाद : पृष्ठ 9–36
4. गुप्ता, एस0पी0 (2011) : अनुसंधान संदर्शिका. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ 58–61
5. चौबे, सरजू प्रसाद (1959) : भारतीय शिक्षा इतिहास. आगरा : रामनारायण लाल प्रकाशन. पृष्ठ 107–121





6. तिवारी, उमेश (एन0डी0) : प्रगतिशील भारत में शिक्षा. आगरा : ज्योति प्रकाशन.
7. दुबे, मनीष एवं विभा (2010) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा इलाहाबाद : शारदा प्रकाशन भवन. पृष्ठ 324–334
8. पचौरी, गिरीश (2008) : शिक्षा के दार्शनिक आधार. मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो. पृष्ठ 102–119
9. पाण्डेय, रामशकल (2008) : प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी इलाहाबाद : शारदा प्रकाशन. पृष्ठ 154–160
10. भटनागर, ए0बी0 एवं अनुराग (2014) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो. पृष्ठ 136–140
11. माथुर, एस0एस0 (2006) : शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर.
12. मार्थो, एस0के0 (एन0डी0) : फिलॉफिकल एण्ड सोशियोलॉजीकल फाण्डेशन ऑफ एजुकेशन. लुधियाना : लन्दन ब्रदर्स.
13. यादव, प्रमोद, रूपाली श्रीवास्तव एवं भावना तिवारी, (2013) : बी0एड0 दिग्दर्शन. आगरा 2 : संजय पब्लिकेशन. पृष्ठ 63–69
14. रूहेला, एस0पी0 (2008) : विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा. आगरा–7 : अग्रवाल पब्लिकेशन. पृष्ठ 112–120
15. रूहेला, एस0पी0 (2008) : विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा. आगरा–7 : अग्रवाल पब्लिकेशन. पृष्ठ 128–132
16. लाल, रमन बिहारी एवं कृष्णकान्त शर्मा (2012) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ. मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो. पृष्ठ 168–181
17. लाल, रमन बिहारी एवं गजेन्द्र सिंह तोमर (2010) : शिक्षा के दार्शनिक आधार. मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो. पृष्ठ 160–181
18. शर्मा, आर0 के0, श्री कृष्ण दुबे एवं हरिशंकर शर्मा (2007) : शिक्षा के दर्शनशास्त्रीय आधार. आगरा : राधा प्रकाशन मन्दिर. पृष्ठ 279–282
19. शर्मा, आर0ए0 (2009) : शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : आर0 लाल बुक डिपो. पृष्ठ 73–234
20. सक्सेना, लक्ष्मी (2010) : समकालीन भारतीय दर्शन. लखनऊ : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. पृष्ठ 118–154
21. सक्सेना, लक्ष्मी (2010) : समकालीन भारतीय दर्शन. लखनऊ : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. पृष्ठ 179–220
22. सक्सेना, सरोज (एन0डी0) : शिक्षा के सिद्धान्त. आगरा : साहित्य प्रकाशन.
23. सिंह, अरूणकुमार (2001) : समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ चतुर्थ संशोधित संस्करण. दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास.
24. त्रिपाठी, राजेन्द्र (2008) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. लखनऊ व इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन. पृष्ठ 194–209